अभिनव स्वस्ति

अभ्यास पुस्तिका

भाग 4

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

अभिनव स्वस्ति अभ्यास पुस्तिका

[एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा प्रतिपादित संस्कृत पाठ्य-पुस्तक
"स्वस्ति" भाग—4 पर आधारित]

[कक्षा 8 के लिए]

लेखक

डा० माणिक गोविन्द चतुर्वेदी

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

शैक्षिक प्रकाशक
888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़,
नई दिल्ली-110005. (भारत)

नाम ____

कक्षा ____________________ सैक्शन ____________________

स्कूल ____

____

प्रकाशक :

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

शैक्षिक प्रकाशक

888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग,

नई दिल्ली-110005. (भारत)

दूरभाष : कार्यालय: 519433, 526933
आवास : 562919, 561321

[प्रथम संस्करण : 1981]

[संशोधित संस्करण : 1983]

[मूल्य :5/50 रु०]

कापीराइट : लेखकाधीन

मुद्रक :
क्वालिटी आफसेट प्रिन्टिंग प्रेस
रिंग रोड, नारायणा

अपनी बात

प्रस्तुत अभ्यास पुस्तिका माला संस्कृत की पाठ्य-पुस्तकें स्वस्ति—1 से 4 भाग पर आधारित हैं। इनमें पाठ्य-पुस्तकों में दिए हुए भाषायी पाठ्य-बिन्दुओं के व्यावहारिक अभ्यास के लिए पाठ्य-पुस्तकों में दी हुई सामग्री के अतिरिक्त भी कुछ सामग्री का उपयोग किया गया है।

विभिन्न भाषा कौशलों को दृष्टि में रखते हुए हिन्दी से संस्कृत में और संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कराया गया है। लिंग, वचन एवं विभक्ति के अनुसार कर्त्ता तथा क्रिया की संगति के अभ्यास के लिए रिक्त स्थानों की पूर्ति, सारिणी की सहायता से वाक्य रचना आदि पर प्रश्न दिए गए हैं। वाक्य रचना के अभ्यास के लिए वाक्य प्रयोग तथा वाक्य संशोधन पर भी प्रश्न हैं। शब्द रूप के अभ्यास के लिए भी प्रश्न दिए गए हैं। 'व्याकरण' भाग में शब्द रूप, धातु रूप और अव्यय भी दिए गए हैं।

आशा है कि प्रस्तुत अभ्यास पुस्तिकाएँ सहज ढंग से संस्कृत सीखने में विद्यार्थियों को सहायक होंगी। अतः ये उन्हें तथा उसके अध्यापकों को समर्पित हैं। विद्यार्थियों से हमारी प्रार्थना है कि प्रश्नों का उत्तर वे स्वयं लिखने का प्रयास करें। उत्तर न लिख सकने पर ही अध्यापकों से सहायता लें।

—लेखक

विषय-सूची

पाठ	विषय		पृष्ठ
प्रथमः	धनमेव बलं लोके	....	1
द्वितीय.	छायाग्राहिणी राक्षसी	....	3
तृतीयः	बुद्धिमान कुलीरकः	....	5
चतुर्थः	सूक्ति-सुधा	....	7
पञ्चमः	दूतवाक्यम्	....	9
षष्ठः	वीरवरस्य स्वामिभक्ति	....	11
सप्तमः	क्षमा तेजस्विनां तेजः	....	13
अष्टमः	शिशुर्भरतः	....	15
नवमः	शिष्टाचारः	....	17
दशमः	सूर्योदय	....	19
एकादशः	नीतिश्लोकाः	....	21
द्वादशः	वर्तकापोतजातकम्	....	24
त्रयोदशः	राजा दिलीपः	....	26
चतुर्दशः	हारीतस्य दयालुता	....	28
पञ्चदशः	मेधाविनौ कुशलवौ	....	31
षोडशः	गीतामृतम्	....	33
सप्तदशः	उपहारवर्मोत्पत्तिः	....	35
अष्टादशः	ध्रुवचरितम्	....	37
एकोनविंशः	गान्धिनः सत्यनिष्ठा	....	39
विंशः	विक्रमादित्योत्पत्तिकथा	....	41
एकाविंशः	उपनिषद्वचनामृतम्	....	43
द्वाविंशः	मृच्छकटिका	....	45
त्रयोविंश	पहेलिका	....	47
चतुर्विंशः	भ्रातृस्नेहः	....	49
पञ्चविंशः	अनुशासनम्	....	51
	व्याकरण भाग	....	54

प्रथमः पाठः

धनमेव बलं लोके

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) परिव्राजकाः कुत्र वसन्ति ?

उत्तर—..

(ख) कः भिक्षापात्रम् नागदन्तकेऽवस्थाप्य स्वपिति ?

उत्तर—..

(ग) चूडाकर्णस्य मित्रस्य किम् अभिधानम् अस्ति ?

उत्तर—..

(घ) तस्य मित्रम् किम् अवदत् ?

उत्तर—..

2. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

(क) भोजनावशिष्टभिक्षान्न सहितम्=..............................।

(ख) समापकारी=..............................।

(ग) सत्त्वोत्साहरहितः=..............................।

(घ) परिव्राजकेनोक्तम्=..............................।

3. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

शब्द	वाक्य
(क) खनिजम्	....
(ख) नागदन्तके	....
(ग) उत्प्लुत्य	....
(घ) स्वपिति	....

4. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

(क) तत्र चूडाकर्णो नाम..................प्रतिवसति ।

(ख) तेन विवरं खनित्वा..................ममधनं गृहीतम् ।

(ग) धनं..................रोचते ।

(घ) तस्य प्रिय सुहृद् वीणाकर्णो परिव्राजकः..................।

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) जंगल में अनेक जानवर रहते हैं ।

....

(ख) चरित्र मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ धन है ।

....

(ग) वीणाकर्ण बुद्धिमान सन्यासी है ।

....

(घ) भारत में साधुओं का आदर होता है ।

....

(ङ) वह सन्यासी आश्रम में रहता है ।

....

द्वितीय: पाठ:

छायाग्राहिणी राक्षसी

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) सिंहिका कस्या: अभिधानम् आसीत् ?

उत्तर—..........

(ख) क: स्वशरीरस्य विस्तारम् अकरोत् ?

उत्तर—..........

(ग) अत्र किम् संशय: नास्ति ?

उत्तर—..........

(घ) इयं कथा कस्मात् उद्धृता अस्ति ?

उत्तर—..........

2. **सन्धि कीजिए—**

(क) प्रावृषि+इव ....।

(ख) तद+इदम् ....।

(ग) पाताल+अम्बरम् ....।

(घ) महासत्त्वम्+उत्थितम् ....।

(ङ) सम्+चिन्त्य ....।

3. **निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ हिन्दी में लिखिए—**

(क) समाक्षिप्तोऽस्मि..........सागरे।

....

....

....

(ख) तस्य सा ________________ पातालाम्बर-संनिभम् ।

____

____

____

(ग) ततस्तस्याः ________________ मनः सम्पातविक्रमः ।

____

____

4. **निम्नलिखित श्लोकों की पूर्ति कीजिए—**

(क) प्रदृश्यमानः सर्वत्र हनुमान् मारुतात्मजः ।

________________________________ ॥

(ख) ________________________________ ।

मनसा चिन्तयामास प्रवृद्धा कामरूपिणी ।

5. **निम्नलिखित शब्दों में मूल धातु व प्रत्यय लिखिए—**

शब्द	मूल धातु	प्रत्यय
(क) दृष्ट्वा	________	________
(ख) प्रदृश्यमानः	________	________
(ग) वर्धमानं	________	________
(घ) संक्षिप्य	________	________

6. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) वहाँ परछाईं को पकड़ने वाली एक राक्षसी रहती थी ।

____

(ख) उसका मुख बहुत भयानक था ।

____

(ग) हनुमान ने राम की बहुत सेवा की ।

____

(घ) राम ने हनुमान की सहायता से लंका को जीता ।

____

(ङ) रावण की लंका सोने की थी ।

____

तृतीयः पाठः

बुद्धिमान कुलीरकः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) बकः किमर्थम् दुःखितः आसीत् ?

उत्तर—————————————————

(ख) कुलीरकः कस्य मित्रम् आसीत् ?

उत्तर—————————————————

(ग) कृष्णसर्पः वृक्षे कान् अभक्षयत् ।

उत्तर—————————————————

(घ) नकुलः कम् विनाशयति !

उत्तर—————————————————

2. **निम्नलिखित लट् लकार के धातु रूपों को लङ् लकार में लिखिए—**

लट् लकार	लङ् लकार
(क) वदति	————
(ख) वसामः	————
(ग) पश्यसि	————
(घ) भक्षयथ	————
(ङ) भवन्ति	————

3. **निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में लङ् लकार में कीजिए—**

शब्द	वाक्य
(क) कोटरे	————
(ख) मत्स्यः	————
(ग) शनैः-शनैः	————
(घ) नवनीतम्	————
(ङ) सर्पेण	————

4. **निम्नलिखित श्लोक का भावार्थ लिखिए—**

उपायं चिन्तयेत्प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत् ।
पश्यतो बकमूर्खस्य नकुलेन हताः बकाः ।

----

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) एक जंगल में जामुन का वृक्ष था ।

(ख) बरगद का पेड़ बहुत बड़ा होता है ।

(ग) वृक्ष पर एक काला सांप रहता था ।

(घ) उस वृक्ष पर चार बगुले भी रहते थे ।

(ङ) नेवले ने सांप को मार डाला ।

चतुर्थः पाठः

सूक्ति-सुधा

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) काः वन्यैः फलैः कालं क्षपयन्ति ?

उत्तर—————————————————

(ख) सभा काभ्याम् विभाति ?

उत्तर—————————————————

(ग) दीनंवचः किमर्थम् न ब्रुयात् ?

उत्तर—————————————————

(घ) पुरुषस्य परं निधानम् किम् अस्ति ?

उत्तर—————————————————

(ङ) सर्पाः किम् पिबन्ति ?

उत्तर—————————————————

2. **निम्नलिखित श्लोकों की पूर्ति कीजिए—**

(क) यदि सन्ति गुणाः पुसां विकसन्त्येव ते स्वयम् ।

—————————————————।

(ख) सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।

—————————————————॥

3. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

(क) मणिना वलयं=——————————विभाति सभा ।

(ख) सर्पाः पिबन्ति=——————————परं निधानम् ।

4. **संधि कीजिए—**

(क) न+एतादृशाः=——————————।

(ख) स्वयम्+एव=——————————।

(ग) चलति+एकेन=——————————।

(घ) शुष्कैः+तृणैः+वनगजा=——————————।

5. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

(क) केचिद् .... वृथा गर्जन्ति ।

(ख) सभा कविना .... च विभाति ।

(ग) शुष्कैस्तृणैर्वनगजा .... भवन्ति ।

(घ) पुरुषस्य परं निधानम् .... एव अस्ति ।

6. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) क्या आप प्रत्येक कार्य सोचकर करते हैं ।

....

(ख) पुरुषों के गुण स्वयं ही विकसित होते हैं ।

....

(ग) इस संसार में महान् पुरुष बहुत कम हैं ।

....

(घ) कुछ बादल व्यर्थ ही गरजते हैं ।

....

(ङ) अच्छे वचन सज्जनों को रुचिकर लगते हैं ।

....

(च) धोबी हमारे कपड़े धोता है ।

....

पञ्चमः पाठः

दूतवाक्यम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) पाण्डवां दूतस्य किम् अभिधानम् आसीत् ?

उत्तर—..

(ख) यः केशवस्य कृते प्रत्युत्थास्यति तम् कः दण्डयिष्यति ?

उत्तर—..

(ग) कः अवदत् यत् कुरुकुलं शीघ्रं नामशेषं भविष्यति ?

उत्तर—..

(घ) दुर्योधनः कम् वद्धुकामः आसीत् ?

उत्तर—..

2. संधि-विच्छेद कीजिए—

(क) दौत्येनागतः = ...

(ख) पार्थिवासन्नमाश्रितस्य = ...

(ग) प्रसन्नोऽस्मि = ...

(घ) किमाहुर्भवन्तः = ...

3. निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) युद्धे शत्रून् .... यशं लभस्व। (वि+जि+ल्यप्)

(ख) केशवः न .... अवदत्। (भी+क्त्वा)

(ग) मया पुस्तकम् ....। (पठ्+तव्यत्)

(घ) अहम् विद्यालये गुरुन् .... पाठं पठामि। (नम्+क्त्वा)

4. निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ लिखिए—

(क) अनुभूतं महद्दुःखं .... विभज्यताम्।

....

....

....

(ख) दातुमर्हसि .... पाण्डवाः ।

....

....

....

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) कृष्ण ने पाण्डवों की छावनी से आकर दुर्योधन से कहा ।

....

(ख) हमें दूत का सम्मान करना चाहिए ।

....

(ग) पराक्रमी विजयी होकर यश प्राप्त करते हैं ।

....

(घ) सब मिलकर शत्रुओं को नष्ट करो ।

....

(ङ) दुर्योधन ने पाण्डवों को राज्य नहीं दिया ।

....

(च) पाण्डव बारह वर्ष तक वन में रहे ।

....

षष्ठः पाठः

वीरवरस्य स्वामिभक्ति

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) शोभावत्याः राज्ञः किम् अभिधानम् आसीत् ?

उत्तर—..

(ख) वीरवरस्य परिवारे कति सदस्याः आसन् ?

उत्तर—..

(ग) शूद्रकः वीरवरम् किम् आदि देश ?

उत्तर—..

(घ) इयं कथा कस्यात् ग्रन्थात् उद्धृता अस्ति ?

उत्तर—..

2. सन्धि कीजिए—

(क) विप्रेभ्यः+च =..।

(ख) सिंहद्वारे+अस्वपत् =..।

(ग) अथ+एकदा =..।

(घ) तद्+अर्थम्+एकम्+एव=..।

(ङ) तस्याम्+च =..।

3. कोष्ठक में दिये गये शब्दों में उपयुक्त विभक्ति लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) एतादृशीं दैनन्दिनीं तस्य चर्यां दृष्ट्वा शूद्रको हृदये..............सन्तोषमवाय। (महान्)

(ख) विदूरे रुदतीं विषाद विकलां काञ्चन..............शुश्राव। (स्त्री)

(ग) हा शूर, हा कृपालो, त्वया शून्या कथम्..............वत्स्यामि। (अस्मद)

(घ) इत्यभिदधानायाः..............आशिषं गृहीत्वा प्रतस्थे। (वसुधा)

4. **निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—**

शब्द	**वाक्य**
(क) यथार्थाभिधाना	-- ।
(ख) वसुन्धरा	-- ।
(ग) करवालं	-- ।
(घ) दैनन्दिनीम्	-- ।
(ङ) गृहीत्वा	-- ।

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) राजा शूद्रक की नगरी का नाम शोभावती था ।

(ख) वीरवर का वेतन प्रतिदिन पाँच सौ दीनार था ।

(ग) देखो, यह कौन-सी स्त्री रो रही है ।

(घ) आज से तीसरे दिन राजा की मृत्यु हो जायेगी ।

(ङ) उस राजा के अनेक नौकर हैं ।

सप्तमः पाठः

क्षमा तेजस्विनां तेजः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) कृष्णा का आसीत् ?

उत्तर—..

(ख) सर्वश्रेष्ठः गुणः कः अस्ति ?

उत्तर—..

(ग) पापस्य मूलम् किम् अस्ति ?

उत्तर—..

(घ) क्षमा केषाम् तेजः अस्ति ?

उत्तर—..

2. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) बहुबाहुः	....	....................।
(ख) मन्युः	....	....................।
(ग) मन्यन्ते	....	....................।
(घ) नश्यति	....	....................।
(ङ) कुर्यात्	....	....................।
(च) क्षत्रियः	....	....................।
(छ) क्रुद्धः	....	....................।

3. **निम्नलिखित श्लोकों को पूरा कीजिए—**

(क) प्रिया च दर्शनीया च पण्डिता च पतिव्रता।

....॥

(ख) ....।

धीरः कालोचितं वाक्यं प्रत्युवाच प्रियां प्रति॥

4. निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ लिखिए—

(क) या वै -- चीरिणम् ॥

(ख) यो न -- परिभवन्त्युत ॥

----

5. निम्नलिखित पदों में धातु, लकार, पुरुष एवं वचन लिखिए—

पद	धातु	लकार	पुरुष	वचन
(क) पश्यामि	--------	--------	--------	--------
(ख) चरेत्	--------	--------	--------	--------
(ग) प्रवर्धंते	--------	--------	--------	--------
(घ) मन्यन्ते	--------	--------	--------	--------

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) नकुल और सहदेव माद्री के पुत्र थे ।

(ख) क्षमा तेजस्वियों का आभूषण है ।

(ग) क्रोध पाप का मूल कारण है ।

(घ) द्रौपदी कृष्ण की बहिन थी ।

(ङ) कृष्ण ने सदा द्रौपदी की सहायता की ।

अष्टमः पाठः

शिशुर्भरतः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) केसरिणी कं किमर्थम् च लङ्घयिष्यति ?

उत्तर—

(ख) इयं कथा कम् लक्ष्यीकरोति ?

उत्तर—

(ग) बालः कस्य पुत्रः आसीत् ?

उत्तर—

(घ) शिशुर्भरतः पाठः कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतः अस्ति ?

उत्तर—

2. **रेखांकित शब्दों में जो सही हो उस पर (✓) चिह्न लगाइए—**

(क) एषा केसरिणी त्वां लङ्घयिष्यति/लङ्घयिष्यसि ।

(ख) अहम् तुभ्यम् क्रीडनकं दास्यामः/दास्यामि ।

(ग) अहो रक्षाकरण्डमस्य मणिबन्धे न दृश्यन्ते/दृश्यते ।

(घ) पुत्रक, मया सहैव मातरम् अभिनन्दिष्यसि/अभिनन्दियति ।

3. **निम्नलिखित पदों के धातु-प्रत्यय विभाग कीजिए—**

पद	धातु	प्रत्यय
(क) श्रुत्वा	------	------
(ख) वर्जयित्वा	------	------
(ग) सङ्कीर्तयितुं	------	------
(घ) भूत्वा	------	------
(ङ) दत्ता	------	------

4. संधि-विच्छेद कीजिए—

(क) चेष्टितमेवास्य = --।

(ख) चेन्मुनिकुमारकोऽयम्= --।

(ग) सानुमत्याऽऽख्यातं = --।

(घ) सेयमत्रभवती = --।

5. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) अविनीत	------------------------	------------------------
(ख) भद्रमुख:	------------------------	------------------------
(ग) सकाशं	------------------------	------------------------
(घ) कथयति	------------------------	------------------------

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) कालिदास संसार के सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं।

(ख) भरत दुष्यन्त का पुत्र था।

(ग) उसने दौड़कर सिंहनी के पुत्र को पकड़ लिया।

(घ) मुझे न देखकर मेरी माँ दुःखी होगी।

(ङ) मुझे यह पुस्तक पढ़ने को दे दो।

नवमः पाठः

शिष्टाचारः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) अतिभोजनेन का हानिः भवति ?

उत्तर—..

(ख) अभिवादनशीलस्य किं किं वर्धते ?

उत्तर—..

(ग) देवाः कं स्थविरं विदुः ?

उत्तर—..

(घ) पन्थाः किमर्थम् दातव्यम् ?

उत्तर—..

(ङ) केषां सम्भवे मातापितरौ क्लेशं सहते ?

उत्तर—..

2. **निम्नलिखित पदों के निर्दिष्ट पुरुष एवं वचन बदलकर लिखिए—**

पद	पुरुष	वचन	
(क) पठेत्	....	....	(मध्यम पुरुष, बहुवचन)
(ख) वर्जयेत्	....	....	(उत्तम पुरुष, द्विवचन)
(ग) कुर्यात्	....	....	(प्रथम पुरुष, बहुवचन)
(घ) व्रजेत्	....	....	(उत्तम पुरुष, बहुवचन)
(ङ) आचरेत्	....	....	(मध्यम पुरुष, एकवचन)

3. **निम्नलिखित श्लोकों को पूरा कीजिए—**

(क) ....।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम् ।।

(ख) ने तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः ।

....।।

4. **निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ लिखिए—**

(क) अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्य .... वर्जयेत् ।

....

....

....

(ख) तयोर्नित्यं .... समाप्यते ।

....

....

....

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) जूठा भोजन नहीं खाना चाहिए ।

....

(ख) कम भोजन करने वाला सदा सुखी रहता है ।

....

(ग) रोगी और वृद्ध को मार्ग देना चाहिए ।

....

(घ) मनुष्यों को जितेन्द्रिय होना चाहिए ।

....

(ङ) हमें परोपकार के लिए उद्यत रहना चाहिए ।

....

(च) माता, पिता तथा गुरु की सेवा करनी चाहिए ।

....

दशमः पाठः

सूर्योदयः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) कस्यां दिशायां सूर्यः उदयति ?

उत्तर—..

(ख) ऋतुनाम् जनकः कः अस्ति ?

उत्तर—..

(ग) प्रभात-वेला की दशा भवति ?

उत्तर—..

(घ) सूर्यः वत्सरं कति भागेषु विभिनक्ति ?

उत्तर—..

2. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) चक्रवर्ती	....	....
(ख) अहोरात्रं	....	....
(ग) ब्राह्मणाः	....	....
(घ) बटुः	....	....

3. **प्रभात-वेला का वर्णन करते हुए सूर्योदय के विषय में संस्कृत में पाँच वाक्य लिखिए—**

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

4. **निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए—**

शब्द	विभक्ति	वचन
(क) पूर्वस्यां	------------------	------------------
(ख) भागेषु	------------------	------------------
(ग) ऋतुनाम्	------------------	------------------
(घ) व्यवहारस्य	------------------	------------------

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) सूर्योदय का समय रमणीय होता है।

(ख) सूर्य ही दिन और रात का जनक है।

(ग) सूर्य ही युगभेद और कल्पभेद का सम्पादन करता है।

(घ) सूर्य इस जगत का सूत्रधार है।

(ङ) सूर्य प्रातः निकलता है और शाम को अस्त होता है।

एकादशः पाठः

नीति श्लोकाः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) के रससिद्धाः कवीश्वराः भवन्ति ?

उत्तर—------------------------------------

(ख) कः नरः कुलीनः अस्ति ?

उत्तर—------------------------------------

(ग) सर्वे गुणाः कम् आश्रयन्ति ?

उत्तर—------------------------------------

(घ) केषाम् सङ्गतिः परिहर्तव्यः ?

उत्तर—------------------------------------

(ङ) अस्माकम् जीवने का हानिः अस्ति ?

उत्तर—------------------------------------

2. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
(क) सुकृतिनः	------------	------------।
(ख) पिशुनता	------------	------------।
(ग) अभिजातः	------------	------------।
(घ) दिनस्य	------------	------------।
(ङ) अनुव्रता	------------	------------।

3. **संधि-विच्छेद कीजिए—**

(क) यस्यास्ति =------------------------

(ख) काञ्चनमाश्रयन्ति =------------------------

(ग) धनैरपयशौ = --

(घ) प्राज्ञेतरैः = --

4. **निम्नलिखित श्लोकों की पूर्ति कीजिए—**

(क) --।

--।

सर्वे: गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति ।

(ख) आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण

--।

5. **निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ लिखिए—**

(क) जयन्ति -- जरामरणजं भयम् ।

(ख) दुर्जनः -- न भयङ्करः ।

----

6. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) सब गुण स्वर्ण में आश्रित रहते हैं ।

(ख) दुर्जन कपटी मित्र होते हैं।

(ग) मूर्खों की संगति दुःखदायक होती है।

(घ) समय की बर्बादी ही हानि है।

(ङ) सज्जनों की मित्रता से अनेक सद्‌गुणों का विकास होता है।

द्वादशः पाठः

वर्तकापोतकजातकम्

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) वर्तकापोतकः भूत्वा सः कैः सह प्रतिवसति स्म ?

उत्तर—

(ख) इतरे तु वर्तकापोतकाः कीदृशाः अभवन् ?

उत्तर—

(ग) बोधिसत्वः उत्पतितुं प्रयत्नं किम् न अकरोत् ?

उत्तर—

(घ) तस्य वचनं श्रुत्वा अग्निः कीदृशः अभवत् ?

उत्तर—

2. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) वर्तका		
(ख) सर्वाशी		
(ग) वनदावः		
(घ) सरभसम्		

3. **निम्नलिखित पदों में धातु व प्रत्यय पृथक्-पृथक् लिखिए—**

पद	धातु	प्रत्यय
(क) लङ्घयितुम्		
(ख) करणीयः		
(ग) श्रुत्वा		

(घ) उत्पतितुं ---------------- ----------------

(ङ) उत्पीड्यमान ---------------- ----------------

4. **निम्नलिखित पदों को कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार बदलकर लिखिए—**

शब्द	परिवर्तित रूप	निर्देश
(क) मारुतेन	----------------	(द्वितीय विभक्ति, बहुवचन)
(ख) भ्रातृभिः	----------------	(चतुर्थी विभक्ति, एकवचन)
(ग) नीडे	----------------	(षष्ठी विभक्ति, द्विवचन)
(घ) तस्य	----------------	(तृतीय विभक्ति, बहुवचन)

5. **'वर्तकापोतकजातम्' का सारांश अपनी भाषा में लिखिए—**

त्रयोदशः पाठः

राजा दिलीपः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) दिलीपस्य वंशस्य किम् अभिधानम् आसीत् ?

उत्तर—

(ख) सः किमर्थं प्रजाभ्यो बलिमग्रहीत् ?

उत्तर—

(ग) सुदक्षिणा का आसीत् ?

उत्तर—

(घ) तौ दम्पती कया काम्यया गुरोः वशिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः ?

उत्तर—

2. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) आगमः		
(ख) मगधवंशराजा		
(ग) आश्रमम्		
(घ) वन्यानां		

3. **निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ लिखिए—**

(क) वैवस्वतो .... प्रणवश्छन्दसामिव ।

(ख) अथाभ्यर्च्य ________________ जग्मतुराश्रमम् ।

____

____

____

(ग) हैयंगवीनमादाय ________________ मार्गं शाखिनम् ।

____

____

____

4. **संधि-विच्छेद कीजिए—**

(क) आसीन्महीक्षितामाद्यः ________________ ।

(ख) प्रणवश्छन्साभिव ________________ ।

(ग) पितरस्तासां ________________ ।

(घ) सहस्रागुणमुत्स्त्रष्टुमादत्ते ________________ ।

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) दलीप की पत्नी का नाम सुदक्षिणा था ।

____

(ख) दोनों गुरु वशिष्ठ के आश्रम में गए ।

____

(ग) विद्वानों का सत्कार करो ।

____

(घ) तुम सब जाकर मैदान में खेलो ।

____

(ङ) मैं विद्यालय से पढ़कर अपने घर जाता हूँ ।

____

चतुर्दशः पाठः

हारीतस्य दयालुता

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) स्नातुं गच्छन् हारीतः कमपश्यत् ?

उत्तर—--

(ख) तमवलोक्य हारीस्य चित्ते किम् भावः आसीत् ?

उत्तर—--

(ग) हारीतस्य कः गुणः आसीत् ?

उत्तर—--

(घ) इयं कथा कस्मात् उद्घृता अस्ति ?

उत्तर—--

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

(क) अयं कथमपि शुकशिशुः अजातपक्षपुट एव ---------------- परिच्युतः ।

(ख) तदेहियावदेव अयम् असुभिर्न (--------), तावदेव गृहाण ------------।

(ग) अनुगम्यमानो मां गृहीत्वा तपोवनाभिमुखं शनैः------------।

3. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) चेतांसि	------------	------------------------
(ख) आलोक्य	------------	------------------------
(ग) मुखेन	------------	------------------------
(घ) सलिल	------------	------------------------

4. **निम्नलिखित शब्दों के रूप निर्देशानुसार विभक्तियों में लिखिए—**

शब्द	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
छाया	प्रथम	....	....	....
	तृतीया	....	....	....
	पञ्चमी	....	....	....
	सप्तमी	....	....	....
तरु	द्वितीया	....	....	....
	चतुर्थी	....	....	....
	षष्ठी	....	....	....
	सप्तमी	....	....	....

5. **निम्नलिखित पदों में विभक्ति और वचन लिखिए—**

शब्द	विभक्ति	वचन
(क) सरसः	....	....
(ख) अङ्गुल्या	....	....
(ग) छायायां	....	....
(घ) असुभिः	....	....

6. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) सज्जनों का हृदय दयालु होता है।

....

(ख) पक्षी वृक्षों पर रहते हैं।

....

(ग) हारीत ने तोते के बच्चे को उठाकर प्यार किया।

....

(घ) दुःखियों पर दया करो।

....

(ङ) आश्रम में ऋषि कुमार रहते हैं।

....

(च) बालक मैदान में गेंद से खेलते हैं।

....

(छ) धनी भिक्षुक को धन देता है।

....

पञ्चदशः पाठः

मेधाविनौ कुशलवौ

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) केषां सद्भिः सङ्गः पुण्येन भवति ?

उत्तर—..

(ख) लवकुशयोः कानि अस्त्राणि आजन्मसिद्धानि ?

उत्तर—..

(ग) गुरुः प्राज्ञेषु जड़ेषु च काम् समानरुपेण वितरति ?

उत्तर—..

(घ) लवकुशयोः माता का आसीत् ?

उत्तर—..

4. **संधि कीजिए—**

(क) सु+आगतम्=............................।

(ख) यथा+इच्छम्=............................।

(ग) तरुः+छाया=............................।

(घ) पुनः इह+आगम्यते=............................।

3. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) विकीर्य	....	....
(ख) मेधाविनौ	....	....
(ग) उपासते	....	....
(घ) भोग्यं	....	....

4. निम्नलिखित पदों की विभक्ति तथा वचन लिखिए—

शब्द	विभक्ति	वचन
(क) प्रदेशे	----------	----------
(ख) ऋषीणाम्	----------	----------
(ग) तयोः	----------	----------
(घ) तेभ्यः	----------	----------

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) लव और कुश सीता के पुत्र थे।

(ख) सीना बालमीकि के आश्रम में रहती थीं।

(ग) लवकुश बहुत तेजस्वी बालक थे।

(घ) बालमीकि उन दोनों बालकों को मन से पढ़ाते थे।

(ङ) सज्जनों की संगति पुण्य से प्राप्त होती है।

(च) हम सब तपस्वियों का स्वागत करते हैं।

षोडशः पाठः

गीतामृतम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) मनसः गतिः कीदृशा भवति ?

उत्तर—..

(ख) केषां परित्राणाय ईश्वरः युगे-युगे संभवति ?

उत्तर—..

(ग) वाङ्मयं तपः कीदृशम् उच्यते ?

उत्तर—..

(घ) सप्तमे श्लोके श्रीकृष्णः अर्जुनम् किम् उपदिशति ?

उत्तर—..

2. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) तडागे .... विकसन्ति। (कमलं, कमले, कमलानि)

(ख) गजः चरणैः ....। (चलति, चलतः, चलन्ति)

(ग) अहम् विद्यालयं ....। (गच्छति, गच्छामि, गच्छसि)

(घ) पिता स्व .... क्रुध्यति। (पुत्रं, पुत्राय)

3. निम्नलिखित श्लोकों की पूर्ति कीजिए—

(क) यदा-यदा हि धर्मस्य ....।

....॥

(ख) ....।

.... संभवामि युगे-युगे ॥

(ग) कर्मण्येवाधिकारस्ते ....।

....॥

4. निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ हिन्दी में लिखिए—

(क) चञ्चलं हि मनः .... सुदुष्करम्।

(ख) यत्र योगेश्वरः .... नीतिर्मतिमम्।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) मनुष्य का मन बड़ा चञ्चल है।

(ख) अभ्यास और वैराग्य से मन वश में होता है।

(ग) उपकार नहीं करने वाले के लिए दान नहीं देना चाहिए।

(घ) धन का इच्छुक मनुष्य भी ईश्वर का भजन करता है।

(ङ) धर्म की स्थापना के लिए प्रभु का अवतार होता है।

(च) जहाँ कृष्ण हैं, वहाँ विजय होती है।

सप्तदशः पाठः

उपहारवर्मोत्पत्तिः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) तापसेन वने का विलोकिता ?

उत्तर—

(ख) वनिता केन स्वकुटीरम् आनीता ?

उत्तर—

(ग) कः सुकुमारं कुमारं राज्ञे समर्पितवान् ?

उत्तर—

(घ) नृपः तस्य किम् अभिधानम् कृतवान् ?

उत्तर—

2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) अशरण्या		।
(ख) संख्ये		।
(ग) अर्भकः		।
(घ) अभ्यलीयत		।
(ङ) एकाकिनी		।

3. सन्धि कीजिए—

(क) किम्+निमित्तम् = ।

(ख) पुष्पपुरम्+उपेत्य = ।

(ग) योद्धम्+अभ्यगात् = ।

4. निम्नलिखित पदों के विभक्ति तथा वचन लिखिए—

पद	विभक्ति	वचन
(क) करसरोरुहैः	----------	----------
(ख) वृष्णिपालेन	----------	----------
(ग) नन्दनः	----------	----------
(घ) दिनानि	----------	----------

5 संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) उसने वन में एक असहाय स्त्री को देखा।

(ख) वह बालक कहाँ जा छिपा ?

(ग) उसके बिना मेरे अनेक दिन व्यतीत हो गये।

(घ) उस बालक का नाम उपहारवर्मा था।

(ङ) राजा ने उस बालक को स्नेह से पाला।

अष्टादशः पाठः

ध्रुवचरितम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) उत्तानपाद राज्ञा पत्न्यो: के अभिधाने आस्ताम् ?

उत्तर—

(ख) वने नारदः ध्रुवम् किम् उपादिशत् ?

उत्तर—

(ग) बालः ध्रुवः ईश्वरं आराध्य किं पदं प्राप्नोत् ?

उत्तर—

(घ) पित्रा तिरस्कृतः बालः किं अकरोत् ?

उत्तर—

2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) भर्तुः		
(ख) अनादृटता		
(ग) शरणं		
(घ) नगरात्		

3. निम्नलिखित श्लोकों की पूर्ति कीजिए—

(क) उत्तानपादनृपतेर्मनु ———————— गताऽभूत् ।

(ख) तावद्विबोधममलं -- विनिवृत्तिहीनम् ।

----

4. निम्नलिखित पदों के धातु व प्रत्यय पृथक्-पृथक् लिखिए—

पद	धातु	प्रत्यय
(क) अधिरोक्ष्यत्	----------	----------
(ख) निरेत्य	----------	----------
(ग) तुष्टूषमाणम्	----------	----------
(घ) प्रणुवन्तम्	----------	----------

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ध्रुव की माता का नाम सुनीति था ।

(ख) उत्तम की माता सुरुचि का स्वभाव कैसा था ?

(ग) ध्रुव ने वन में कठोर तप किया ।

(घ) ध्रुव के तप से भगवान् प्रसन्न हुए ।

(ङ) परिश्रम से ही सब कार्य सफल होते हैं ।

एकोनविंशः पाठः

गान्धिनः सत्यनिष्ठा

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) राजाः हरिश्चन्द्रस्य चरित्रे काः गुणाः आसन् ?

उत्तर—

(ख) गाइल्स महोदयः कः आसीत् ?

उत्तर—

(ग) निरीक्षकस्य ध्यानम् कुत्र आसीत् ?

उत्तर—

(घ) शिक्षकः आत्मनं किम् अनुभवत् ?

उत्तर—

2. **संधि कीजिए—**

(क) कठिनः+अस्तु = ।

(ख) अनादरम्+अनुभवत् = ।

(ग) मूल्यम्+एतस्य = ।

(घ) हतभाग्यम्+एकाकिनम् = ।

3. **निम्नलिखित क्रिया पदों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—**

क्रियापद	वाक्य
(क) बभूव	।
(ख) परावर्तत	।
(ग) अशक्नोत्	।
(घ) अमन्यत	।

4. **निम्नलिखित धातु-रूप लङ् लकार में लिखिए—**

धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क) भू	मध्यम्			

(ख) रुद्   उत्तम   ________ ________ ________

(ग) कुप   प्रथम   ________ ________ ________

(घ) मन्   मध्यम   ________ ________ ________

5. महात्मा गांधी की सत्यनिष्ठा के सम्बन्ध में अपने शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए—

____

____

____

____

____

विंशः पाठः

विक्रमादित्योत्पत्तिकथा

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) महेन्द्रादित्यस्य राज्ञाः किमभिधानम् आसीत् ?

उत्तर—--

(ख) विक्रमादित्यस्य जन्मः कुत्र अभवत् ?

उत्तर—--

2. **निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ लिखिए—**

(क) अस्त्यवन्तिषु--------------------------------पुरी।

(ख) नाम्ना--------------------------------भूपतिः।

3. **निम्नलिखित श्लोकों को पूरा कीजिए—**

(क) सतीव सा पराधृष्या पद्मिनीवाश्रिता श्रिया।

--॥

(ख) --।

शचीवेन्द्रस्य गौरीव शंभोः श्रीरिव शार्ङ्गिणः॥

4. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) धर्माढ्या	----------------	----------------------------------
(ख) सतीव	----------------	----------------------------------
(ग) गतेषु	----------------	----------------------------------
(घ) देवलोकम्	----------------	----------------------------------

5. **निम्नलिखित धातुओं में रूप निर्देशानुसार लिखिए—**

धातु	पुरुष	लकार	वचन
(क) आ+गम्	मध्यम	लोट	बहुवचन
(ख) सृज्	उत्तम	लङ्	एकवचन

(ग) अस्	प्रथम	लृट्	द्विवचन
(घ) दिश्	उत्तम	लङ्	बहुवचन

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) विक्रमादित्य उज्जयिनी का राजा था।

____

(ख) वह बहुत पराक्रमी तथा यशस्वी था।

____

(ग) उसने शत्रुओं को पराजित किया।

____

(घ) उसके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी।

____

(ङ) वह विद्वानों का आदर करता था।

____

एकविंशः पाठः

उपनिषद्वचनामृतम्

1. चन्द्रमस् शब्द के रूप लिखिए—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	----------	----------	----------
द्वितीया	----------	----------	----------
तृतीया	----------	----------	----------
सप्तमी	----------	----------	----------

2. निम्नलिखित श्लोक को पूरा लिखिए—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत् ।

-- ॥

3. निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ लिखिए—

(क) न तत्र सूर्यो ---------------- विभाति ।

(ख) एको देवः ---------------- निर्गुणश्च ।

----

4. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) त्वयि	----------	------------------------
(ख) सर्वव्यापी	----------	------------------------
(ग) साक्षी	----------	------------------------
(घ) आपः	----------	------------------------

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ईश्वर सब जगह रहता है।

(ख) दूसरे के धन की इच्छा मत करो।

(ग) सूर्य ही सारे जगत को प्रकाश देता है।

(घ) ईश्वर के अनेक नाम हैं।

(ङ) एकाग्र-मन से उसकी उपासना करो।

द्वाविंशः पाठः

मृच्छकटिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) कः आर्यचारुदत्तस्य पुत्रः आसीत् ?

उत्तर—---

(ख) रदनिका तस्मै कीदृशीं शकटिकां अयच्छत् ?

उत्तर—---

(ग) रोहसेनः सुवर्णशकटिकां कुत्र अपश्यत् ?

उत्तर—---

(घ) वसन्तसेना का आसीत् ?

उत्तर—---

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) एतेनार्य चारुदत्तः---------------विनोदयति ।

(ख) अथ किं निमित्तम्---------------रोदति ।

(ग) ततः पुनस्तां याचतो मयेयं मृत्तिकाशकटिका---------------।

(घ) मुग्धेन---------------मन्त्रयसि ।

3. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

शब्द	**अर्थ**	**वाक्य**
(क) एहि	------------	------------------------------
(ख) प्रातिवेशिकः	------------	------------------------------
(ग) पुष्कर	------------	------------------------------
(घ) शकटिका	------------	------------------------------

4. संधि कीजिए—

(क) कुतः+अस्माकम् =------------------------------------।

(ख) खलुः+आर्यचारुदत्तस्य =------------------------------------।

(ग) मुखेन+अतिकरुणाम् =------------------------------------।

(घ) पुनः+अयम् =------------------------------------।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) यह मिट्टी की गाड़ी है।

(ख) वसन्त सेना बहुत दयालु थी।

(ग) चारुदत्त की सज्जनता विख्यात थी।

(घ) हमें सदा अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

(ङ) रोहसेन अपने घर चला गया।

त्रयोविंश: पाठ:

पहेलिकाः

1. निम्नलिखित पहेलियों के उत्तर दीजिए—

(क) रेफ आदौ मकारोऽन्ते ———————— जनप्रियः ।

————————————————————————

(ख) अपदो दूरगामी ———————— पण्डितः ।

————————————————————————

2. निम्नलिखित धातुओं के लृट् लकार में रूप लिखिए—

	धातु	पुरुष	वचन
(क)	रुद्	मध्यम	एकवचन
(ख)	नी	उत्तम	द्विवचन
(ग)	चर्	प्रथम	बहुवचन
(घ)	पठ्	मध्यम	द्विवचन

3. निम्नलिखित श्लोकों को पूरा कीजिए—

(क) रेफ आदौ मकारोन्ते ———————— ।

———————————————— ॥

(ख) ———————————————— ।

———————— हा, हा केशव केशव ॥

4. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ लिखिए—

(क) चक्री त्रिशूली ———————— रामचन्द्रः ।

————————————————————————

————————————————————————

————————————————————————

(ख) अपदो दूरगामी..स पण्डितः ।

----

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) भीमसेन महाबलिष्ठ थे ।

(ख) पक्षी आकाश में विचरण करते हैं ।

(ग) वे युद्ध में वीर-गति को प्राप्त हुए ।

(घ) स्त्रियों ने गंगा में स्नान किया ।

(ङ) बाल्मीकि ने रामायण की रचना की ।

चतुर्विंशः पाठः

भ्रातृस्नेहः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) कयोः भ्रातृस्नेहः प्रसिद्धः अस्ति ?

उत्तर—..

(ख) मैथिलि कस्य दुहिता आसीत् ?

उत्तर—..

(ग) रामः वनं किमर्थम् अगच्छत् ?

उत्तर—..

(घ) रामः कति वर्षाणि वने अवसत् ?

उत्तर—..

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

(क) अहमेव निवेदयिष्ये पितृवचनकराय....................।

(ख) अयं ते दयितो भ्राता भरतो....................।

(ग) भरतावलोकनार्थं विशाली क्रियतां ते....................।

(घ) भयात्, दर्पात्, विभ्रमात् वा नाहं....................।

3. **निम्नलिखित श्लोक का अर्थ लिखिए—**

इह स्थास्यामि देहेन..............................भविष्यति।

....

....

....

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

शब्द	अर्थ	वाक्य
(क) अनुव्रतः	----------------	--
(ख) अभिधातुम्	----------------	--
(ग) प्राकृतः	----------------	--
(घ) नियोगात्	----------------	--

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) भरत ने पूछा, 'राम कहाँ हैं'' ?

(ख) राम पिता की आज्ञा से वन को गये ।

(ग) राम के साथ लक्ष्मण और सीता भी वन को गए ।

(घ) मुझे नीचमार्ग पर मत ले जाओ ।

(ङ) वन में रावण सीता को हर ले गया ।

पञ्चविंशः पाठः

अनुशासनम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) अस्माभिः कीदृशे मार्गे न चलितव्यम् ।

उत्तर—--

(ख) नरस्य का. गुणाः सन्ति ?

उत्तर—--

(ग) नरस्य काः अवगुणाः सन्ति ?

उत्तर—--

(घ) किम् परिहेयम् अस्ति ?

उत्तर—--

2. निम्नलिखित श्लोकों को पूरा कीजिए—

(क) मा कुरु दर्पं मा कुरु गर्वम् ।

----------------------------।

(ख) मा पिव मादक वस्तु अपेयम् ।

----------------------------।

3. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

शब्द	**अर्थ**	**वाक्य**
(क) अनुशासनम्	------------------	------------------------------।
(ख) दर्पम्	------------------	------------------------------।
(ग) मोदय	------------------	------------------------------।
(घ) कुमार्गे	------------------	------------------------------।

4. **'अनुशासनम्' पर संस्कृत में पांच वाक्य लिखिए—**

(क) --

(ख) --

(ग) --

(घ) --

(ङ) --

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) अहंकार मत करो।

(ख) एकाग्रचित्त होकर विद्या पढ़ो।

(ग) सदा दूसरों का उपकार करो।

(घ) किसी को भी मत सताओ।

(ङ) मादक वस्तुओं का सेवन न करो।

(च) स्वाध्याय से प्रमाद मत करो ।

(छ) अपने देश की सेवा करो ।

(ज) परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करो ।

व्याकरण—भाग

एकारान्त पुंल्लिग शब्द चन्द्रमस् (चन्द्रमा)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः !	हे चन्द्रमसौ !	हे चन्द्रमसः !

विशेष—वेधस्, सुमनस्, दुर्मनस् आदि शब्दों के रूप 'चन्द्रमस्' के समान चलते हैं।

सकारान्त पुंल्लिग शब्द—विद्वस् (विद्वान्)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः

विशेष—श्रेयस्, ज्यायस् आदि शब्दों के रूप 'विद्वस्' केसमान चलते हैं।

चकारान्त स्त्रीलिंग शब्द—वाच् (वाणी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः

तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्	हे वाचौ	हे वाचः

विशेष—त्वच्, रुच् आदि शब्दों के रूप 'वाच्' के समान चलते हैं।

शकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'दिश्' (दिशा)

प्रथमा	दिक् (दिग्)	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक् ! (दिग्)	हे दिशौ !	हे दिशः !

विशेष—ईदृश्, तादृश्, एतादृश्, यादृश्, त्वादृश्, मादृश्, अस्मादृश् आदि पुंल्लिग शब्दों के रूप चलते हैं।

सकारान्त नपुंसकलिंग शब्द 'मनस्' (मन)

प्रथमा	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मनः	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पञ्चमी	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
षष्ठी	मनसः	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	मनसोः	मनस्सु
सम्बोधन	हे मनः !	हे मनसी !	हे मनांसि !

विशेष—चेतस्, यशस्, पयस्, श्रेयस्, रजस्, तपस्, शिरस् आदि शब्दों के रूप 'मनस्' के समान चलते हैं।

आत्मनेपदी 'सेव्' (सेवा करना) धातु के रूप

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सेवसे	सेवेते	सेवन्ते
	(वह सेवा करता है)	(वे दो सेवा करते हैं)	(वे सब सेवा करते हैं)
मध्यम	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
	(तू सेवा करता है)	(तुम दो सेवा करने हो)	(तुम सब सेवा करते हो)
उत्तमं	सेवे	सेवा वहे	सेवा महे
	(मैं सेवा करता हूँ)	(हम दो सेवा करते हैं)	(हम सब सेवा करते हैं)

लङ्लकार (भूतकाल)

प्र० पु०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
म० पु०	असेवथाः	असेवेताम्	असेवध्वम्
उ० पु०	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लोट्लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म० पु०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ० पु०	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म० पु०	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ० पु०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

विधिलिङ् लकार (प्रार्थना, सम्भावना आदि)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म० पु०	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उ० पु०	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

आत्मनेपदी लभ् (प्राप्त करना) धातु के रूप

लट्‌लकार (वर्तमान काल)

प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

लङ्‌लकार (भूतकाल)

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लोट्‌लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

लृटलकार (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

विधिलिङ्‌लकार (प्रार्थना, सम्भावना आदि)

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेथः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

आत्मनेपदी रुच् (अच्छा लगना) धातु के रूप

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचते	रोचेते	रोचन्ते
म० पु०	रोचसे	रोचेथे	रोचध्वे
उ० पु०	रोचे	रोचावहे	रोचामहे

लङ्लकार (भूतकाल)

प्र० पु०	अरोचत	अरोचेताम्	अरोचन्त
म० पु०	अरोचथाः	अरोचेथाम्	अरोचध्वम्
उ० पु०	अरोचे	अरोचेवहि	अरोचामहि

लोट्लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

प्र० पु०	रोचताम्	रोचेताम्	रोचन्ताम्
म० पु०	रोचस्व	रोचेथाम्	रोचध्वम्
उ० पु०	रोचै	रोचावहे	रोचामहै

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	रोचिष्यते	रोचिष्येते	रोचिष्यन्ते
म० पु०	रोचिष्यसे	रोचिष्येथे	रोचिष्यध्वे
उ० पु०	रोचिष्ये	रोचिष्यावहे	रोचिष्यामहे

विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, सम्भावना आदि)

प्र० पु०	रोचेत	रोचेयाताम्	रोचेरन्
म० पु०	रोचेथाः	रोचेयाथाम्	रोचेध्वम्
उ० पु०	रोचेय	रोचेवहि	रोचेमहि

धातु तथा प्रत्यय

धातु अर्थ	क्त्वा	तुमुन्	क्त	क्तवतु क्तवत्	शतृ-शानच	तव्य	अनीय
पठ् पढ़कर	पठित्वा (पढ़कर)	पठितुम् (पढ़ने के लिए)	पठित (पढ़ा हुआ)	पठितवत् (पढ़ा हुआ)	पठत् (पढ़ता हुआ)	पठितव्य (पढ़ना चाहिए)	पठनीय (पढ़ने योग्य)
पत् (गिरना)	पतित्वा	पतितुम्	पतित	पतितवत्	पतत्	पतितव्य	पतनीय
हस् (हँसना)	हसित्वा	हसितुम्	हसित	हसितवत्	हसत्	हसितव्य	हसनीय
चल् (चलना)	चलित्वा	चलितुम्	चलित	चलितवत्	चलत्	चलितव्य	चलनीय
धाव् (दौड़ना)	धावित्वा	धावितुम्	धावित	धावितवत्	धावत्	धावितव्य	धावनीय
खाद् (खाना)	खादित्वा	खादितुम्	खादित	खादितवत्	खादत्	खादितव्य	खादनीय
जप् (जपना)	जपित्वा	जपितुम्	जपित	जपितवत्	जपत्	जपितव्य	जपनीय
चर् (चरना)	चरित्वा	चरितुम्	चरित	चरितवत्	चरत्	चरितव्य	चरणीय
ज्वल् (जलना)	ज्वलित्वा	ज्वलितुम्	ज्वलित	ज्वलिवत्	ज्वलत्	ज्वलितव्य	ज्वलनीय
रक्ष् (रक्षा करना)	रक्षित्वा	रक्षितुम्	रक्षित	रक्षितवत्	रक्षत्	रक्षितव्य	रक्षणीय
भू (होना)	भूत्वा	भवितुम्	भूत	भूतवत्	भवत्	भवितव्य	भवनीय
गम् (जाना)	गत्वा	गन्तुम्	गत	गतवत्	गच्छत्	गन्तव्य	गमनीय
क्रीड् (खेलना)	क्रीडित्वा	क्रीडितुम्	क्रीडित	क्रीडितवत्	क्रीडत्	क्रीडितव्य	क्रीडनीय
वद् (बोलना)	उदित्वा	वदितुम्	उदित	उदितवत्	वदत्	वस्तव्य	वसनीय
वस् (रहना)	उषित्वा	वस्तुम्	उषित	उषितवत्	वसत्	वदितव्य	वदनीय
नम् (झुकना)	नत्वा	नन्तुम्	नत	नतवत्	नमत्	नन्तव्य	नमनीय
पच् (पकाना)	पक्त्वा	पक्तुम्	पक्व	पक्ववत्	पचत्	पक्तव्य	पचनीय
स्था (ठहरना)	स्थित्वा	स्थातुम्	स्थित	स्थितवत्	तिष्ठत्	स्थातव्य	स्थानीय
दृश् (देखना)	दृष्ट्वा	दृष्टुम	दृष्ट	दृष्टवत्	पश्यत्	द्रष्टव्य	दर्शनीय
पा (पीना)	पीत्वा	पातुम्	पीत	पीतवत्	पिबत्	पातव्य	पानीय
दा (देना)	दत्त्वा	दातुम	दत्त	दत्तवत्	यच्छत्	दातव्य	दानीय
नी (ले जाना)	नीत्वा	नेतुम्	नीत	नीतवत्	नयत्	नेतव्य	नयनीय

याच् (माँगना)	याचित्वा	याचितुम्	याचित	याचितवत्	याचमान	याचितव्य	याचनीय
वाञ्छ् (चाहना)	वाञ्छित्वा	वाञ्छितुम्	वाञ्छित	वाञ्छितवत्	वाञ्छत्	वाञ्छितव्य	वाञ्छनीय
शुच् (शोक करना)	शोचित्वा	शोचितुम्	शोचित	शोचितवत्	शोचत्	शोचितव्य	शोचनीय
जि (जीतना)	जित्वा	जेतुम्	जित	जितवत्	जयत्	जेतव्य	जयनीय
हृ (हरना)	हृत्वा	हर्त्तुम्	हृत	हृतवत्	हरत्	हर्त्तव्य	हरणीय
तृ (तैरना)	तीर्त्वा	तर्त्तुम्	तीर्ण	तीर्णवत्	तरत्	तर्त्तव्य	तरणीय
घ्रा (सूँघना)	घ्रात्वा	घ्रातुम्	घ्रात	घ्रातवत्	जिघ्रत्	घ्रातव्य	घ्राणीय
सेव् (सेवा करना)	सेवित्वा	सेवितुम्	सेवित	सेवितवत्	सेवमान	सेवितव्य	सेवनीय
लभ् (प्राप्त करना)	लब्ध्वा	लब्धुम्	लब्ध	लब्धवत्	लभमान	लब्धव्य	लभनीय
शिक्ष् (शिक्षा देना)	शिक्षित्वा	शिक्षितुम्	शिक्षित	शिक्षितवत्	शिक्षमाण	शिक्षितव्य	शिक्षणीय
वृध् (बढ़ना)	वृद्ध्वा	वर्द्धितुम्	वृद्ध	वृद्धवत्	वर्धमान	वर्द्धव्य	वर्धनीय
भाष् (बोलना)	भाषित्वा	भाषितुम्	भाषित	भाषितवत्	भाषमाण	भाषितव्य	भाषणीय
यत् (प्रयत्न-करना)	यतित्वा	यतितुम्	यतित	यतितवत्	यतमान	यतितव्य	यतनीय
रुच् (रोचक-लगना)	रोचित्वा	रोचितुम्	रोचित	रोचितवत्	रोचमान	रोचितव्य	रोचनीय
कम्प् (काँपना)	कम्पित्वा	कम्पितुम्	कम्पित	कम्पितवत्	कम्पमान	कम्पितव्य	कम्पनीय
शंक् (शंका-करना)	शंकित्वा	शंकितुम्	शंकित	शंकितवत्	शंकमान	शंकितव्य	शंकनीय
लज्ज् (लज्जा करना)	लज्जित्वा	लज्जितुम्	लज्जित	लज्जितवत्	लज्जमान	लज्जितव्य	लज्जनीय
क्षम् (क्षमा करना)	क्षमित्वा	क्षन्तुम्	क्षमित	क्षमितवत्	क्षममाण	क्षन्तव्य	क्षमणीय
लिख् (लिखना)	लिखित्वा	लेखितुम्	लिखित	लिखितवत्	लिखत्	लेखितव्य	लेखनीय
विद् (जानना)	वित्त्वा	वेत्तुम्	वित्त	वित्तवत्	विन्दत्	वेदितव्य	वेदनीय
प्रच्छ् (पूछना)	पृष्ट्वा	प्रष्टुम्	पृष्ट	पृष्टवत्	पृच्छत्	प्रष्टव्य	प्रच्छनीय
स्पृश् (स्पर्श करना)	स्पृष्ट्वा	स्प्रष्टुम्	स्पृष्ट	स्पृष्टवत्	स्पृशत्	स्प्रष्टव्य	स्पर्शनीय
मुच् (मुक्त करना)	मुक्त्वा	मोक्तुम्	मुक्त	मुक्तवत्	मुञ्चत्	मोक्तव्य	मोचनीय
भ्रम् (घूमना)	भ्रान्त्वा	भ्रान्तुम्	भ्रान्त	भ्रान्तवत्	भ्राम्यत्	भ्रान्तव्य	भ्रमणीय
नृत् (नाचना)	नर्तित्वा	नर्तितुम्	नृत्त	नृत्तवत्	नृत्यत्	नर्तितव्य	नर्तनीय
क्रुध् (क्रोध करना)	क्रुद्ध्वा	क्रोद्धुम्	क्रुद्ध	क्रुद्धवत्	क्रुध्यत्	क्रोद्धव्य	क्रोधनीय
नश् (नष्ट करना)	नष्ट्वा	नष्टुम्	नष्ट	नष्टवत्	नश्यत्	नष्टव्य	नशनीय
सिध् (सिद्ध होना)	सिद्ध्वा	सेद्धुम्	सिद्ध	सिद्धवत्	सिध्यत्	सेद्धव्य	सेधनीय

श्रम् (परिश्रम करना)	श्रान्त्वा	श्रान्तुम्	श्रान्त	श्रान्तवत्	श्राम्यत्	श्रान्तव्य	श्रमणीय
चुर् (चुराना)	चोरयित्वा	चोरयितुम्	चोरित	चोरितवत्	चोरयत्	चोरयितव्य	चोरणीय
चिन्त् (चन्ता करना)	चिन्तयित्वा	चिन्तयितुम्	चिन्तित	चिन्तितवत्	चिन्तयत्	चिन्तयितव्य	चिन्तनीय
कथ् (कहना)	कथयित्वा	कथयितुम्	कथित	कथितवत्	कथयत्	कथयितव्य	कथनीय
तड् (पीटना)	ताडयित्वा	ताडयितुम्	ताडित	ताडितवत्	ताडयत्	ताडयितव्य	ताडनीय
तुल् (तोलना)	तोलयित्वा	तोलयितुम्	तोलित	तोलितवत्	तोलयत्	तोलयितव्य	तोलनीय
भक्ष् (खाना)	भक्षयित्वा	भक्षयितुम्	भक्षित	भक्षितवत्	भक्षयत्	भक्षयितव्य	भक्षणीय
पूज् (पूजना)	पूजयित्वा	पूजयितुम्	पूजित	पूजितवत्	पूजयत्	पूजयितव्य	पूजनीय
गण् (गिनना)	गणयित्वा	गणयितुम्	गणित	गणितवत्	गणयत्	गणयितव्य	गणनीय
पाल् (पालना)	पालयित्वा	पालयितुम्	पालित	पालितत्	पालयत्	पालयितव्य	पालनीय
प्र+विश् (प्रवेश करना)	प्रविश्य	प्रवेष्टुम्	प्रविष्ट	प्रविष्टवत्	प्रविशत्	प्रवेष्टव्य	प्रवेशनीय
वि+क्री (बेचना)	विक्रीय	विक्रेतुम्	विक्रीत	विक्रीतवत्	विक्रीणत्	विक्रेतव्य	विक्रयीय

इसी प्रकार अन्य धातुओं के साथ प्रत्यय लगाकर शब्द बनते हैं। यदि किसी धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगा हो तो क्त्वा प्रत्यय को ल्यप् प्रत्यय में बदल देते हैं। जैसे— नी+क्त्वा—नीत्वा। नी में आ उपसर्ग लगा होने पर आ+नी+ल्यप्=आनीय शब्द बनता है।

विशेष शब्दों (उपपदों) के साथ विभक्ति नियम

शब्द	विभक्ति	उदाहरण
नाम-अव्यय	प्रथमा	तत्र भासुरकः नाम सिहः अवसत्।
गत्यर्थक धातु	द्वितीया, चतुर्थी	कृषक : ग्रामं ग्रामाया व गच्छति।
द्विकर्मक धातु	द्वितीया,	भिक्षुकः धनिकं वस्त्रं याचति।
उभयत. (दोनों ओर)	द्वितीया	अध्यापकम् उभयतः छात्राः सन्ति।
सर्वतः (सब ओर)	द्वितीया	जनकम् सर्वतः वालाः उपाविशन्।
परितः ,,	,,	दुर्गम् परित जलम्।
अभितः ,,	,,	राजानम् अभितः सेवकाः सेवन्ते।
धिक्	द्वितीया	चौरम् धिक्।

शब्द	विभक्ति	उदाहरण
उपर्युपरि (बहुत ऊपर)	द्वितीया	पर्वतम् उपर्युपरि वृक्षाः सन्ति।
प्रति	द्वितीया	मनुष्य. ग्रामम् प्रति अगच्छत्।
अनु (पीछे)	द्वितीया	बालः जनकम् अनुगच्छति।
उप (पास)	द्वितीया	छात्राः गुरुम् उपगच्छन्ति।
सह, साकम् (साथ)	तृतीया	लक्ष्मणः रामेण सहवनम् अगच्छत्।
सार्धम् (साथ)	तृतीया	सीता रामेण साकं (सार्धम्) वनम् अगच्छत्।
सदृश, सम, तुल्य (समान)	तृतीया, षष्ठी	शीलेन (शीलस्य) तुल्यं (सदृशं, समम्) वित्तम् न अस्ति।
अलम् (बस)	तृतीया	अलम् विवादेन।
रुच् (अच्छा लगना)	चतुर्थी	मह्यं मोदकम् रोचते।
क्रुध् (क्रोध करना)	चतुर्थी	जनकः पुत्राय क्रुध्यति।
नमः (प्रणाम करना)	चतुर्थी	शिवाय नमः।
स्वस्ति (कल्याण)	चतुर्थी	प्रजाभ्य स्वस्ति।
स्वाहा (आहुति देना)	चतुर्थी	इन्द्राय स्वाहा।
बहिः (बाहर)	पञ्चमी	ग्रामाद् वहिः वृक्षः भवन्ति।
अनन्तरम् (बाद में)	पञ्चमी	सायंकालात् अनन्तरम् सर्वत्र अंधकारः भविष्यति।
तुल्य (समान)	षष्ठी	चन्द्रस्य तुल्यम् मुखम्।
निर्धारण में	षष्ठी, सप्तमी	पक्षिषु पक्षिणां वा काकः धूर्तः भवति।
किसी क्रिया के होते समय की स्थिति का उल्लेख	सप्तमी	सैनिकेषु गतेषु कृषक. पुनः अगच्छत्।

अव्यय-शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अथ	आरम्भ/इसके पश्चात्	किन्तु/परन्तु	मगर
अत्र	यहाँ	परस्परम्	आपस में
तत्र	वहाँ	सततम्	निरन्तर, लगातार
यत्र	जहाँ	पृथक्	अलग
सर्वत्र	सब जगह	पश्चात्	बाद में
अकस्मात्	अचानक	कुत्र	कहाँ
सहसा	अचानक	यदा	जब
अद्य	आज	कदा	कब
अधुना	अब	तदा	तब
अथवा	या	कथम्	क्यों/कैसे
वा	या	ततः	उसके बाद/फिर
अपि	भी	हि	क्योंकि
अन्यथा	नहीं तो	पूर्वम्	पहले
अतः	इसलिए	पुरा	प्राचीन काल में
अतएव	इसीलिए	सर्वदा/सदा	हमेशा
अतीव	बहुत अधिक	च	और
अधः	नीचे	खलु	निश्चय
तथा	उस प्रकार, वैसे	चिरम्	देर से
यथा	जिस प्रकार, जैसे	विना	बिना
तथापि	तो भी	तावत्	तब तक
अद्यत्वे	आजकल	यावत्	जब तक
आम्	हाँ	न	नहीं
इतः	इधर	नोचेत्	नहीं तो
उतः	उधर	पुनः/पुनर्	फिर

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इतस्ततः	इधर-उधर	प्रति	ओर
कुतः	किधर	प्रायः	बहुधा
इत्थम्	इस प्रकार	बहिः/बहिर्	बाहर
उच्चैः	ऊपर	यत्	कि
नीचैः	नीचे	यदि	यदि/अगर
उपरि	ऊपर	यद्य	अगरचे
एकदा	एक बार	यतः	क्योंकि
एव	ही	शीघम्	जल्दी
किम्	क्या	ह्यः	कल (बीता हुआ)
सर्वतः	सब ओर	शनैः-शनैः	धीरे-धीरे
श्वः	कल (आने वाला)	सह/साकम्	साथ
परश्वः	परसों	सार्धम्	साथ